मियाँ पुतनू

मधु सहगल



मधु सहगल



मियाँ पुतनू

[बाल कहानी-संग्रह]

मधु सहगल

एकता प्रकाशन

७, कस्तूरबा गांधी मार्ग, इलाहाबाद २११००१

मियाँ पुतनू

बच्चों। आज तुम्हें एक मज़ेदार कहानी सुनाती हूँ।

एक थे मियाँ पुतनू। एक बालिश्त के मियाँ पुतनू और सवा हाथ लम्बी उनकी दाढ़ी, जब वो सड़क पर चलते तो दाढ़ी सड़क पर झाड़ू लगाती। उन्हें देखकर सभी हँसते मगर वो थे बहुत हिम्मती।

एक दिन मियाँ पुतनू ने उस नगर के राजा की लड़की से शादी करने की ठानी और घर से निकल पड़े शादी करने के लिए।

मियाँ पुतनू चले जा रहे थे, वहाँ के राजा के महल की ओर। तभी उनके कानों में कुछ धीमी-सी आवाज सुनाई दी। उन्होंने जब मुड़कर देखा तो एक चींटी उनसे पूछ रही थी "मियाँ पुतनू, मियाँ पुतनू तुम कहाँ जा रहे हो ?" मियाँ पुतनू ने कहा, "मैं जा रहा हूँ राजा की लड़की से शादी करने।" चींटी बोली, "मियाँ पुतनू, मियाँ पुतनू हमें भी ले चलो अपने साथ, हमने कभी कोई शादी नहीं देखी है।"

मियाँ पुतनू ने कहा : "आजा मेरे नाखून के अन्दर"। चींटी उनके नाखून के अन्दर घुस कर बैठ गई। थोड़ी दूर और आगे



"चींटी उनके नाखून के अन्दर घुस कर बैठ गई।"

बढ़ने पर फिर कुछ आवाज़ सुनाई दी। मियाँ पुतनू ने देखा कि एक बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करके उनसे कुछ पूछ रही थी। बिल्ली ने पूछा, "मियाँ पुतनू, मियाँ पुतनू कहाँ जा रहे हो ?"

मियाँ पुतनू बोले, "बिल्ली रानी, मैं जा रहा हूँ राजा की लड़की से शादी करने।"

बिल्ली बोली, "मियाँ पुतनू हमको भी अपने साथ ले चलो, शादी में अच्छा-अच्छा खाना खाने को मिलेगा।"

मियाँ पुतनू बोले, "बिल्ली रानी अगर साथ चलना चाहती हो तो घुस जाओ मेरे एक कान में।" बिल्ली खुश होकर मियाँ पुतनू के कान में आराम से बैठ गई। मियाँ पुतनू फिर मज़े से चलने लगे।

चलते-चलते मियाँ पुतनू को कुत्ते की भौं-भौं सुनकर रुकना पड़ा। कुत्ते का भी वही सवाल था। मियाँ पुतनू ने उसे भी अपने दूसरे कान में बैठा लिया और फिर चलने लगे। थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर रस्सी और सोंटा मिला, उन दोनों को भी अपनी कमर में लपेट कर फिर चलने लगे। आगे पहुँच कर एक नदी मिली। मियाँ पुतनू को इतना चलने से प्यास तो लग ही रही थी, उन्होंने सोचा थोड़ा-सा नदी का पानी पी लिया जाए। ज्यों ही वो पानी-पीने के लिए झुके, उन्होंने सुना कि नदी उनसे कुछ कह रही है। नदी ने पूछा, "मियाँ पुतनू कहाँ जा रहे हो ?"

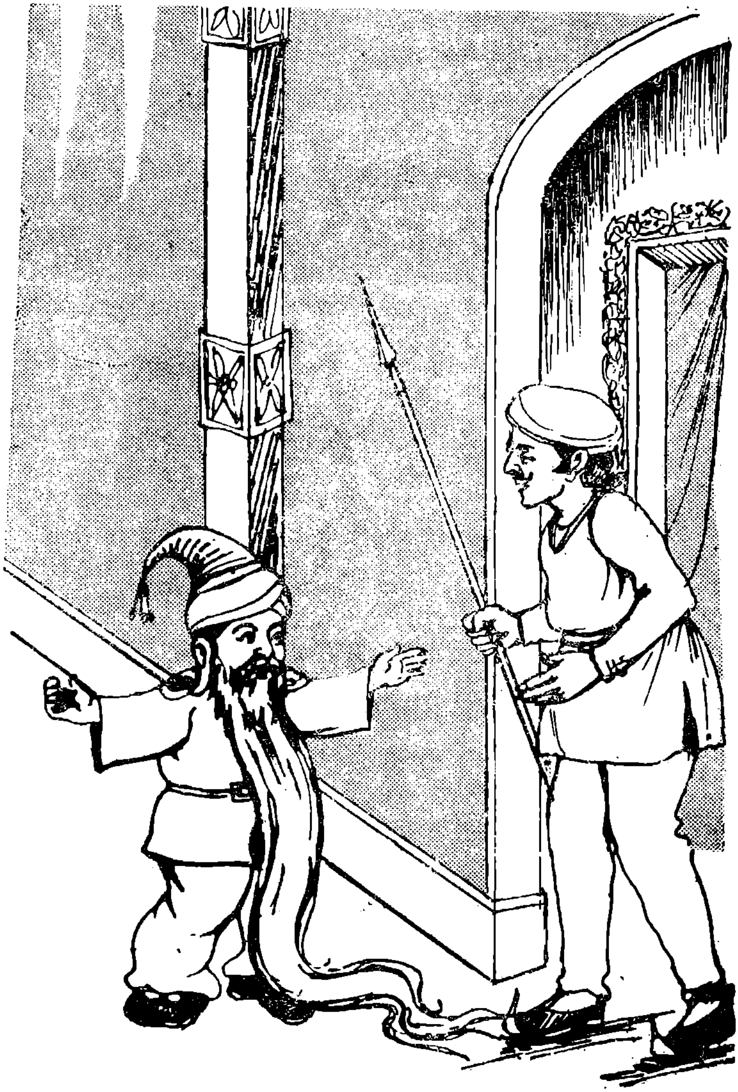
मियाँ पुतनू बोले, "मैं जा रहा हूँ राजा की लड़की से शादी करने।"

नदी ने कहा, "मियाँ पुतनू, हमें भी अपने साथ ले चलो। हमने कभी कोई शादी नहीं देखी है।"

मियाँ पुतनू बोले, "अच्छा आ जाओ मेरी नाक के अन्दर।" नदी बहुत खुश हुई और जल्दी से मियाँ पुतनू की नाक में घुस गई।

सब को साथ लेकर मियाँ पुतनू खुशी-खुशी आगे बढ़ने लगे। अब उन्हें दूर पर राजा का महल दिखाई देने लगा था। वह और जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगे कि जल्दी से राजा साहब से मिलें और उनकी लड़की से शादी करें। वह नहीं जानते थे कि वहाँ पहुँच कर उन्हें क्या-क्या परेशानियाँ उठानी पड़ेंगी। राजा के महल में पहुँचकर मियाँ पुतनू ने वहाँ के चौकीदार से कहा, "अपने राजा साहब से कह दो कि मियाँ पुतनू आए हैं उनकी लड़की से शादी करने।" चौकीदार ने मियाँ पुतनू को ऊपर से नीचे तक देखा फिर डाँट कर बोला, "अपनी खैर चाहते हो तो फौरन यहाँ से चले जाओ। ज़रा से हैं और आए हैं राजा की लड़की से शादी करने।"

मियाँ पुतनू के ऊपर इसका कुछ भी असर न हुआ। उसने फिर चौकीदार से राजा साहब को ख़बर कर आने को कहा। चौकीदार ने राजा साहब से कहा, "महाराज एक आदमी नीचे



"अपने राजा साहब से कह दो कि मियाँ पुतनू आए हैं उनकी लड़की से शादी करने।"

खड़ा है, जो अपना नाम मियाँ पुतनू बताता है। वह एक बालिश्त का है और उसकी दाढ़ी सवा हाथ लम्बी है।" चौकीदार की बात सुनकर राजा साहब को गुस्सा आ गया, उन्होंने हुक्म दिया कि, "मियाँ पुतनू को मस्त हाथी के कटघरे में डाल दिया जाए।"

मियाँ पुतनू को कटघरे में डाल दिया गया। जैसे ही मस्त हाथी मियाँ पुतनू को कुचलने के लिए दौड़ता हुआ आया मियाँ पुतनू ने कहा—

"नाखून छोड़ नखपट्टी भारी, चल रे चींटी तेरी बारी।"

यह सुनते ही चींटी धीरे से नाखून से निकल कर हाथी की सूँड़ में घुस गई। चींटी के घुसते ही मस्त हाथी अपनी सूँड़ पटकने लगा और सूँड़ पटकते-पटकते मर गया। चींटी फिर से मियाँ पुतनू के नाखून में घुस गई। मियाँ पुतनू एक तरफ़ आराम से लेट कर सो गए। दूसरे दिन सुबह राजा ने अपने नौकरों को हुक्म दिया, "मियाँ पुतनू मस्त हाथी के कटघरे में मरे पड़े होंगे, उन्हें बाहर निकाला जाए।"

नौकर जब कटघरे के अन्दर पहुँचे तो यह देख कर हैरान रह गए कि मस्त हाथी तो मरा पड़ा है और मियाँ पुतनू आराम से सो रहे हैं। नौकरों ने जा कर जल्दी से यह ख़बर राजा साहब को सुनाई। यह ख़बर सुनकर राजा को ताज्जुब भी हुआ और गुस्सा भी आया।

राजा साहब ने फौरन हुक्म दिया, "मियाँ पुतनू को जंगली कबूतरों के दरबे में डाल दिया जाए। जंगली कबूतर मियाँ पुतनू को नोच-नोच कर मार डालेंगे।" नौकरों ने ऐसा ही किया। मियाँ पुतनू को जंगली कबूतरों के दरबे में डाल दिया गया।

जैसे ही मियाँ पुतनू की तरफ़ कबूतरों ने बढ़ना शुरू किया वैसे ही मियाँ पुतनू ने कहा:—

"कान छोड़ कनपट्टी भारी, चल रे बिल्ली तेरी बारी।"

बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करती हुई निकली और उसने सभी जंगली कबूतरों को मार डाला। मियाँ पुतनू फिर मीठी नींद सो गए।

दूसरे दिन फिर नौकरों ने देखा कि मियाँ पुतनू तो सो रहे हैं और सभी कबूतर मरे पड़ें हैं।

राजा साहब को जब यह खबर मिली तो उन्होंने गुस्से में आकर अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि, "मियाँ पुतनू को कोड़े लगाए जाएँ।" राजा साहब के आठ दस सिपाही मियाँ पुतनू को पकड़ कर ले आए और उन पर कोड़े लगाने शुरू किए। दो चार कोड़े खाने के बाद ही मियाँ पुतनू ने कहा:—

"कमर छोड़ कमर पट्टी भारी, चल रे रस्सी सोंटे तेरी बारी।"

इतना सुनते ही रस्सी सोंटे ने अपना काम शुरू किया।

रस्सी ने सभी सिपाहियों को कस कर बाँधा और सोंटे ने उन्हें मारना शुरू किया। सिपाही बेचारे बौखला गए। वो तो आए थे मियाँ पुतनू को मारने और उन्हें ही मार खानी पड़ी। सभी सिपाही मियाँ पुतनू से हाथ जोड़ कर माफी माँगने लगे। तब कहीं जाकर उनकी जान बची।

यह सारा हाल जब राजा साहब को मालूम हुआ तो उन्होंने कहा, "कि जरूर कुछ गड़बड़ होता है तभी मियाँ पुतनू बार-बार बच जाता है। अबकी मैं अपने सामने उसे ढेर-सी लकड़ियों के बीच में खड़ा करवा के आग लगवाऊँगा। फिर देखना है कि वह कैसे बच पाता है।"

जल्दी ही यह भी इंतजाम हो गया, मियाँ पुतनू को एक बड़े से लकड़ी के ढेर के बीच में खड़ा करके लकड़ियों में आग लगा दी गई। शहर के बहुत से लोग इस अजीब आदमी को अजीब मौत देखने के लिए इकट्ठा हो गए थे।

जैसे ही आग की लपटें मियाँ पुतनू को छूने लगी, उन्होंने कहा:—

"नाक छोड़ नकपट्टी भारी, चल रे नदी तेरी बारो।"

इतना सुनते ही मियाँ पुतनू की नाक से नदी की धारा बह निकली और देखते-ही-देखते आग बुझ गई। धीरे-धीरे पानी फैलने लगा और राजा साहब के महल के अन्दर घुसने लगा। चारों तरफ़ भगदड़ मच गई।



"मियाँ पुतनू की नाक से नदी की धारा बह निकली।"

राजा साहब बचाओ-बचाओ चिल्लाते हुए अपने महल में ऊपर, और ऊपर चढ़ने लगे। आख़िर जब उन्हें कुछ न समझ आया तब वो महल की छत पर हाथ जोड़कर खड़े हो गए और कहने लगे—

"मियाँ पुतनू मुझ पर दया करो। मैं अपनी लड़की से तुम्हारी शादी कर दूँगा, मगर इस पानी को वापस बुला लो, नहीं तो सारा शहर डूब जाएगा।"

इतना सुनते ही मियाँ पुतनू ने नदी को फिर से अपनी नाक में वापस बुला लिया। खूब धूम-धाम से मियाँ पुतनू की शादी राजा की लड़की से हो गई। खूब सारा सामान लेकर मियाँ पुतनू खुशी-खुशी अपने घर की ओर चल पड़े। कुत्ता उनकी रखवाली करता आ रहा था।

रास्ते में नदी, रस्सी, सोंटा, कुत्ता, बिल्ली व चींटी सभी को मियाँ पुतनू ने उनके घर पर छोड़ा।

मियाँ पुतनू भी राजा की लड़की से शादी करके एक छोटे से देश के राजा बन गए और मज़े से रहने लगे।

दो भाई

एक गाँव में दो भाई रहते थे। एक का नाम था घड़गालन और दूसरे का नाम था घड़गैलन। घड़गालन बड़ा था और घड़गैलन छोटा। थे तो दोनों सगे भाई, मगर दोनों में बहुत अंतर था। बड़ा भाई बहुत मेहनती और सीधा बल्कि थोड़ा बुद्धू था, जबकि छोटा भाई घड़गैलन कम मेहनत करने वाला और चालाक था। इनके पिता के थोड़े से खेत थे। उसी से इन लोगों की गुजर-बसर आराम से हो जाती थी।

एक साल गाँव में सूखा पड़ा। घर में जो कुछ अनाज इकट्ठा करके रखा था, वो भी धीरे-धीरे खत्म होने लगा। बूढ़े किसान ने एक दिन अपने दोनों लड़कों को बुलाकर कहा—"बेटों, घर में अब दो महीने का अनाज और बचा है। इस तरह हाथ पर हाथ रखकर बैठने से तो काम चलेगा नहीं, तुम लोग शहर जाकर कुछ काम ढूँढो ताकि किसी तरह रोटी चल सके।"

घड़गालन जो बड़ा मेहनती था, बोला, "पिता जी, मैं बड़ा हूँ इसलिए मैं शहर जाकर काम करूँगा और घड़गैलन यहाँ रह कर आप लोगों की सेवा करेगा।"

दो चार दिन बाद ही घड़गालन ने एक गठरी में अपने कपड़े

रखे और शहर जाने की तैयारी कर ली । चलते समय उसकी माँ ने एक पोटली में सत्तू देकर बड़े प्यार से समझाया, "बेटा तू पहली बार घर से बाहर जा रहा है, अपना ध्यान रखना । जहाँ भी नौकरी करना वहाँ खूब मेहनत और ईमानदारी से काम करना ।" घरवालों से विदा लेकर घड़गालन शहर पहुँचा ।

शहर पहुँचकर घड़गालन नौकरी की तलाश में घूमता रहा मगर कई दिन बीत गए और उसे कहीं काम नहीं मिला । यह दिन उसने माँ का दिया हुआ सत्तू खाकर बिताए थे । एक दिन उसने सोचा कि आज अगर काम नहीं मिला तो गाँव वापस लौट जाऊँगा । यह सोच कर वो फिर काम ढूँढने निकला ।

होनी की बात, उसे एक कंजूस सेठ के यहाँ काम मिल गया । सेठ ने १० रुपया महीना और खाने पर घड़गालन को काम दिया । इसके अलावा सेठ ने कहा कि एक पत्ते से ज्यादा खाना एक बार में नहीं मिलेगा और यदि घड़गालन नौकरी छोड़ेगा तो उसे अपने कान व नाक कटवा कर जाना होगा और यदि सेठ उसे निकालेगा तो वो सेठ के नाक, कान काट लेगा । घड़गालन ने बिना सोचे समझे यह शर्त भी मान ली, उसे तो काम चाहिए था ।

घड़गालन अपने काम में जुट गया । दोपहर को जब खाने का समय हुआ तो सेठानी ने उससे एक पत्ता लाकर खाना ले लेने को कहा । घड़गालन जब पत्ता ढूँढ़ने निकला तो उसे आस-पास कोई पेड़ नहीं दिखाई दिया । घर के बाहर एक इमली का पेड़



"उसे एक कंजूस सेठ के यहाँ काम मिल गया।"

था। वो जल्दी से उसी का पत्ता तोड़ लाया सेठानी इमली का पत्ता देखकर बहुत खुश हुई। उसने एक चावल उस पत्ते पर रख दिया। घड़गालन एक चावल खाकर उठ गया। रात में भी यही हुआ।

घड़गालन के लिए तो यह नौकरी एक मुसीबत हो गई। दिन भर वो खूब मेहनत से काम करता और खाने को मिलता बस एक चावल दिन में और एक रात में। बिना खाना खाए और इतनी मेहनत से वो दिन पर दिन दुबला और कमजोर हो रहा था। उसने सोचा किसी तरह एक महीना तो काटना ही है नहीं तो १० रुपये तनख्वाह भी नहीं मिलेगी।

एक महीना काम करने के बाद उसे १० रुपये मिले। उसने रुपए सम्हाल कर रखे और सोचा कि रात में जब सेठ और सेठानी सो जाएँगे वो चुपचाप भाग लेगा।

सेठ ने तो पहले ही समझ लिया था कि घड़गालन ने एक महीना भूखं रहकर इतनी मेहनत से काम किया है। अब पैसे मिलने पर ये जरूर भाग जाएगा। नींद का बहाना बनाकर सेठ और सेठानी बिस्तर पर लेटे रहे।

आधी रात के बाद सेठ जी को कुछ खट-पट की आवाज सुनाई पड़ी, उन्होंने उठकर बाहर देखा तो घड़गालन अपनी गठरी लेकर भागने वाला था। सेठ जी ने फौरन उसे पकड़ लिया और

शर्त के हिसाब से उसे नाक, कान कटवा कर जाने के लिए कहा ।

घड़गालन के कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करे । अगर वो घर जाता है तो कान व नाक से हाथ धोता है और अगर काम करता है तो अब उसमें इतनी ताकत नहीं थी कि वो भूखे रहकर सारा काम कर सके । उसे कोई रास्ता नहीं दिखाई दिया और वो सेठ जी से अपने कान व नाक कटवा कर गाँव की ओर चल दिया । दर्द से कराहता हुआ अपनी गठरी में दस रुपये का नोट सम्हाले घड़गालन अपने घर पहुँचा । उसकी ऐसी हालत देखकर उसके माता-पिता को बहुत दुःख हुआ । छोटा भाई घड़गैलन तो गुस्से से काँपने लगा, उसने सोचा कि वो अपने भाई का बदला उस कंजूस सेठ से लेकर रहेगा ।

घड़गालन के चले जाने के बाद सेठ व सेठानी जी को बहुत परेशानी होने लगी । उन्हें सारा काम अपने हाथ से करना पड़ता, जिसकी उन्हें आदत नहीं थी । वो फिर से एक ऐसे नौकर की तलाश में लग गए जो घड़गालन की ही तरह उनकी शर्तें मान-कर, मेहनत से उनका काम करे ।

जब कुछ दिनों में घड़गालन के नाक कान के जख्म ठीक हो गए तो उसके छोटे भाई घड़गैलन ने उससे कंजूस सेठ का नाम पता पूछा और शहर जाने की तैयारी करने लगा । माँ-बाप ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की, क्योंकि वे घड़गालन की दुर्दशा

देखकर डरे हुए थे, मगर घड़गैलन ने उनकी एक नहीं सुनी। उसने कहा, "जब तक मैं उस कंजूस सेठ के यहाँ नौकरी करके अपने भाई का बदला नहीं ले लूँगा, मुझे चैन नहीं मिलेगा।" यह कहकर उसने घरवालों से विदा ली और शहर की ओर चल पड़ा।

शहर पहुँच कर जल्दी ही घड़गैलन ने उस कंजूस सेठ का पता लगा लिया। जब घड़गैलन सेठ के यहाँ पहुँचा तो देखा कि सेठ व सेठानी दोनों घर के काम में लगे हैं। घड़गैलन ने सेठ को बताया कि वह गाँव से नौकरी की तलाश में आया है। उसके भाई घड़गालन ने ही उसे सेठ जी के यहाँ काम करने को भेजा है, वो मेरा बड़ा भाई है।

सेठ और सेठानी यह सब सुनकर बहुत खुश हुए, उन्होंने सोचा कि यह भी अपने भाई की ही तरह मेहनती और बेवकूफ होगा। सेठ जी ने घड़गैलन के सामने भी अपनी वही पुरानी शर्तें रखीं जो घड़गैलन ने मान ली, और काम में लग गया।

घड़गैलन धीरे-धीरे काम करता रहा। दोपहर में जब खाने का वक्त हुआ तो सेठानी ने कहा, "घड़गैलन जाकर पत्ता ले आओ और खाना ले लो।" घड़गैलन तो इसी इन्तजार में था, वो घर से बाहर निकला तो सामने वहीं एक इमली का पेड़ था। घड़गैलन को अपने भाई की याद आ गई जिसने इसी पेड़ का पत्ता ले जाने की भूल की थी। थोड़ी दूर पर घड़गैलन को एक

केले का पेड़ दिखाई दिया। घड़गैलन केले का पेड़ देखकर खुशी से झूम उठा। उसने सोचा कि वह केले का पत्ता ले जाएगा और सेठानी को मजा चखाएगा। घड़गैलन जल्दी-जल्दी केले के पेड़ तक गया और एक बड़ा सा पत्ता तोड़ लाया।

सेठानी घड़गैलन के इंतजार में बैठी थीं और सोच रहीं थीं कि घड़गैलन ने बहुत देर कर दी पत्ता लाने में, तभी उन्हें घड़-गैलन हाथ में केले का पत्ता लाता दिखाई दिया। केले का पत्ता देखकर तो सेठानी घबरा गईं, क्योंकि उन्होंने तो सोचा था कि यह भी इमली की पत्ती लाएगा और एक चावल खाकर काम कर देगा।

सेठानी ने जितना भी खाना बनाया था वह सब नौकर को दे देना पड़ा और दोबारा खाना बनाना पड़ा।

घड़गैलन की तो मौज हो गई। वो दोनों समय केले का पत्ता भर कर खाना ले लेता, काम भी वो अपने भाई जितना नहीं कर पाता था। पंद्रह दिन में ही कंजूस सेठ व सेठानी इस नए नौकर से घबरा गए। ये काम भी कम करता और खाना खूब डट कर खाता।

एक दिन सेठ जी ने सोचा कि इस नौकर को निकाल दिया जाए, मगर तभी सेठानी ने उन्हें उनकी शर्त याद दिलाई। सेठ जी अगर नौकर को निकालते तो पहले उससे अपने नाक, कान



"सेठानी ने जितना भी खाना बनाया था सब नौकर को दे देना पड़ा"

कटवाते । सेठ जी के कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे इस मुसीबत से अपनी जान बचाएँ ।

सेठानी को एक तरकीब सूझी । उन्होंने सेठ जी से कहा, "हम लोग चुपचाप रात में घर से भाग जाएँ, और नौकर से कुछ न कहें ।" यह बात सेठ जी को भी अच्छी लगी और वो भी धीरे-धीरे जाने की तैयारी चुपचाप करने लगे । सेठानी ने एक बक्स में अपने कपड़े लगाए । एक लोहे के बड़े बक्से में थोड़ा खाने व नाश्ते का सामान रखा और ताला लगाना भूल गई ।

घड़गैलन होशियार तो था ही । वो दोनों की तैयारी देखकर समझ गया कि यह लोग मुझसे परेशान होकर और अपनी नाक, कान कटवाने के डर से, घर छोड़कर भाग रहे हैं । वह चुपचाप खाने के सामान वाले बक्से में बैठ गया ।

आधी रात में सेठानी उठीं, उन्होंने बक्से में ताला लगाया फिर सेठ जी को उठाया और कहा, "अभी आधी रात बाकी है, जल्दी से निकल चलें, नहीं तो सुबह होने पर घर से निकलना मुश्किल होगा ।" सेठ जी जल्दी से उठे और हाथ मुँह धोकर चलने को तैयार हुए । सेठ जी को बक्सा सर पर लेकर चलना था । जैसे ही उन्होंने बक्सा रखा, उन्हें बहुत भारी लगा । उन्होंने सेठानी से पूछा, "इसमें क्या रखा है जो इतना भारी है ?" सेठानी ने कहा, "मैंने इसमें लड्डू, मठरी और पूरी कचौड़ी सब बनाकर रखा है ताकि जब रास्ते में भूख लगे तब हम लोग खोल

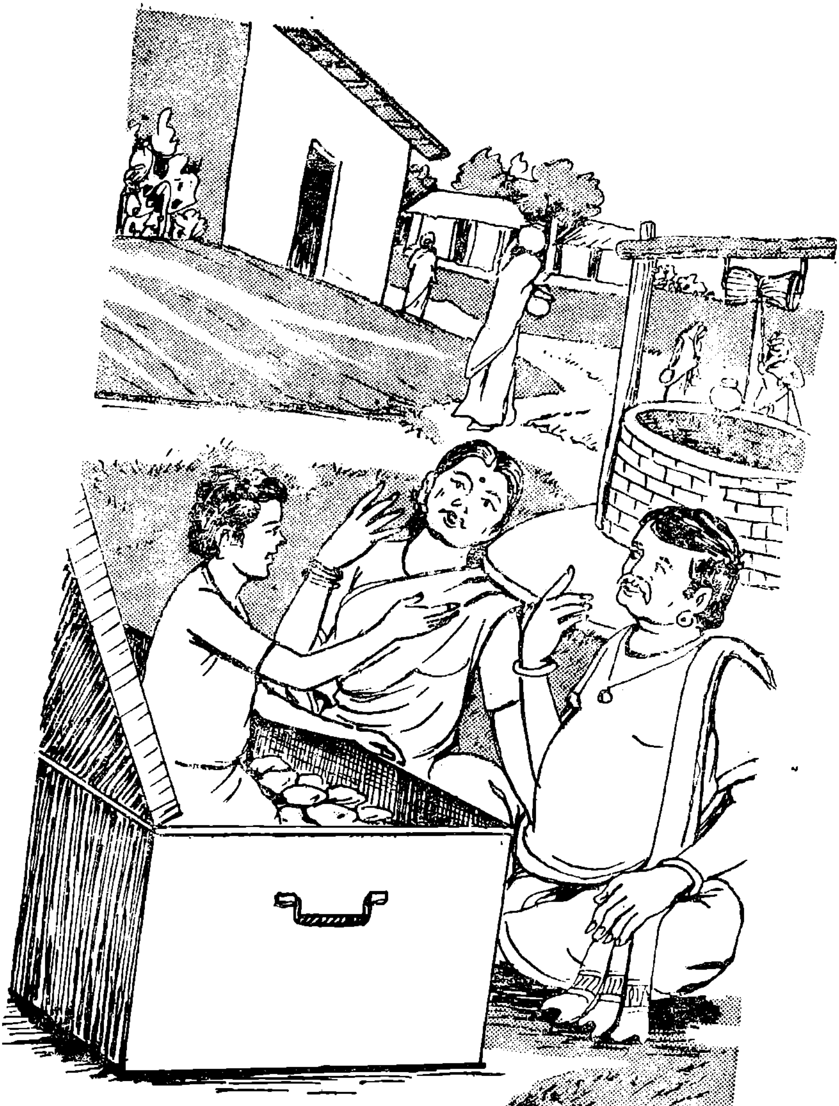
कर खा सकें । तुम्हें बोझ उठाने की आदत नहीं है इसलिए भारी लग रहा होगा । सामान ज्यादा नहीं है ।"

सेठ जो ने सोचा कि शायद सेठानी की बात ही ठीक है, वो धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए ।

दोपहर तक दोनों चलते-चलते थक गए । सामने एक पेड़ था और एक कुआँ भी, जहाँ कुछ औरतें पानी भर रहीं थीं । सेठ जी ने सोचा कि इस पेड़ के नीचे बैठकर थोड़ा आराम किया जाए और जो सामान सेठानी बनाकर लाई हैं वो खाकर कुएँ का ठंढा पानी पिया जाए । यह सोच कर सेठ जी ने बक्सा पेड़ के नीचे रखा और सेठानी के साथ वहीं सुस्ताने लगे ।

दस मिनट आराम करने के बाद सेठानी ने बक्सा खोला, मगर यह क्या ? उसके अन्दर तो घड़गैलन निकला । घड़गैलन को बक्स के अन्दर देख कर सेठ और सेठानी हैरानी से एक दूसरे का मुँह देखने लगे । वो दोनों तो मन ही मन खुश होते आ रहे थे कि घड़गैलन को अच्छा बेवकूफ बनाया और अपने नाक व कान भी बचाए मगर हुआ इसका उल्टा ।

घड़गैलन बक्से से बाहर आया और सेठ जी से बोला, "क्या आप अपनी शर्त भूल गए जो मुझे बिना कुछ बताए भाग आए ? मैं तो पहले ही आप दोनों की चालाकी समझ गया था और मौका पाकर बक्से के अन्दर छिप गया था । अब आप नहीं बच सकते । मैं आपका नाक कान काटकर ही यहाँ से जाऊँगा ।



"घड़गैलन को बक्स के अन्दर देख कर सेठ और सेठानी हैरानी से एक दूसरे का मुँह देखने लगे।"

बेचारे सेठ जी ने घड़गैलन से बहुत माफी माँगी, मगर उनकी एक न चली। लाचार होकर उन्हें अपने कान, नाक कटवाने पड़े।

घड़गैलन ने अपने भाई का बदला ले लिया। वो खुशी-खुशी अपने घर की ओर चल पड़ा।

घड़गैलन को सही सलामत घर लौटते देखकर उसके घर वाले बहुत खुश हुए। घड़गैलन ने सेठ सेठानी का पूरा किस्सा घर वालों को बताया और सेठ जी के नाक कान भी दिखाए।

बच्चों ! इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि दुःख के समय भी अगर हम हिम्मत और समझदारी से काम लें तो मुश्किल को आसान कर सकते हैं।

तिलका सुन्दर

एक गाँव में एक पति पत्नी रहते थे। उनकी एक बहुत सुन्दर बेटी थी जिसका नाम उन्होंने तिलका सुन्दर रखा था। तिलका सुन्दर देखने में तो सुन्दर थी ही, मन की भी बहुत सुन्दर थी। उसकी बातें सभी को बड़ी भली लगतीं, गाँव के सभी लोग उसे बहुत चाहते थे। उन लोगों का जीवन सुख से बीत रहा था। तिलका सुन्दर अब १० साल की हो गई थी, उसके माता-पिता को उसकी शादी की चिंता सताने लगी थी। गाँव में तो लड़कियों की जल्दी ही शादी हो जाती है।

तभी एक साथ गाँव में बहुत ज़ोर का हैज़ा फैला। हैज़े ने तिलका सुन्दर की माँ को भी नहीं छोड़ा। माँ के मरने के बाद से तो तिलका सुन्दर का सारा जीवन ही बदल गया। जहाँ पहले वह हर समय हँसती, गुनगुनाती रहती थी, वहाँ अब वो हर समय गुम-सुम रहने लगी। उसका सारा समय घर के कामों में ही बीत जाता। थोड़ा बहुत जो खाली समय मिलता उसमें वो कभी अपनी माँ के कमरे में तो कभी माँ के हाथ से लगाए बेरी के पेड़ के नीचे गुम सुम बैठ कर बिताती। उसके घर में उसकी माँ की निशानी एक गाय भी थी, जिसकी सेवा करके

तिलका सुन्दर को सुख मिलता। गाय भी तिलका सुन्दर को बड़े प्यार से देखा करती थी और उसकी सेवा के बदले में उसे ढेर सारा मीठा-मीठा दूध देती थी।

तिलका सुन्दर की ऐसी हालत देखकर उसके पिता भी बहुत उदास रहते। दिन भर के बाद काम से थक कर लौटते तो तिलका सुन्दर उनके खाने-पीने व आराम का पूरा ध्यान रखती और सब काम कर चुकने के बाद अकेले में बैठ कर अपनी माँ को याद करके रोती रहती।

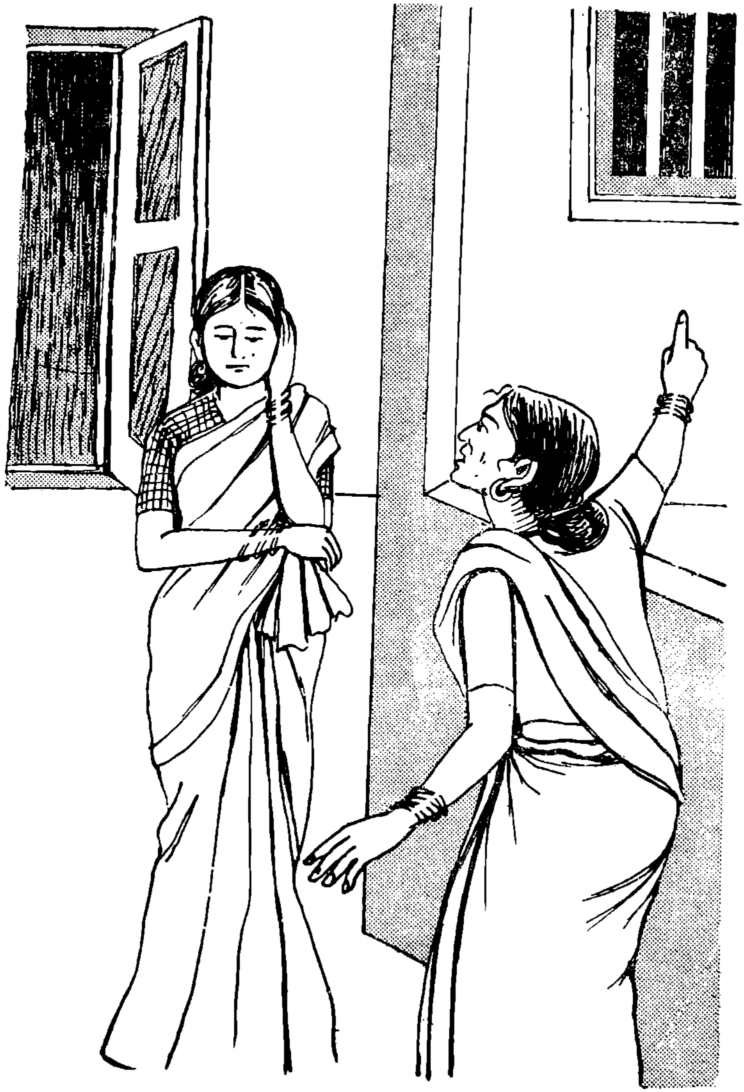
इसी तरह दो साल बीत गए मगर तिलका सुन्दर जरा भी नहीं बदली। हँसना तो जैसे वो भूल ही गई थी। पहले हर समय वो गुलाब के फूल की तरह खिली-खिली रहती थी, अब मुरझाई सी रहने लगी।

तिलका सुन्दर के पिता को गाँव वालों ने दूसरी शादी कर लेने की सलाह दी। पहले तो वो नहीं माने मगर फिर उन्होंने सोचा कि हो सकता है नई माँ के आने से उनकी बेटी का मन कुछ बहल जाए। वो तो सारा दिन काम के लिए घर से बाहर रहते हैं, और तिलका सुन्दर को दिन भर अकेले ही घर में रह कर घर का सारा काम करना पड़ता है। यही सब सोच कर उन्होंने दूसरी शादी कर ली।

शादी के बाद एक साल बहुत अच्छा बीत गया। घर में

फिर से खुशी लौट आई। तिलका सुन्दर को भी नई माँ के आने से खुशी हुई। उसका अकेलापन दूर हो गया और घर का काम भी उसकी नई माँ ने बहुत कुछ सम्भाल लिया था। तिलका सुंदर के मन में जो डर था कि सौतेली माँ के आने से उसे और कष्ट मिलेगा, जाता रहा।

दो साल बाद तिलका सुन्दर की एक बहन हुई। उसका नाम रखा गया चौंड़ भसक्को क्योंकि देखने में वो तिलका सुन्दर से ठीक उल्टी थी। उसका रंग काला था और शक्ल भी बदसूरत थी, मगर नई माँ के लिए तो वह चाँद का टुकड़ा थी। अब नई माँ हर समय चौंड़ को गोदी में लिए रहतीं और प्यार करतीं। घर का काम भी अब फिर से धीरे-धीरे तिलका सुन्दर के ऊपर छोड़ती जा रही थीं। तिलका सुन्दर से अगर कोई काम ठीक से न हो पाता तो उसके लिए उसे अपनी नई माँ से बहुत डाँट खानी पड़ती। बेचारी सब कुछ चुपचाप सहती और काम में लगी रहती, अपने पिता से वो कुछ भी न कहती। चौंड़ भसक्को जब दो साल की हुई तो उसके एक भाई भी हो गया जो न तो सुंदर था और न ही चौंड़ भसक्को की तरह बहुत बदसूरत। घर में बेटा होने से सभी बहुत खुश थे। अब तो दोनों बच्चों की देख भाल में नई माँ बहुत थक जातीं। उन्हें यह देखने का ध्यान न रहता कि तिलका सुन्दर ने खाना खाया या नहीं। कभी-कभी तिलका सुन्दर भूखी ही सो जाती।



"तिलका सुन्दर से अगर कोई काम ठीक से न हो पाता तो उसके लिए उसे अपनी नई माँ से बहुत डाट खानी पड़ती।"

तिलका सुन्दर सभी की प्यारी थी, सभी उसकी बहुत बड़ाई करते। यह सब उसकी नई माँ को बिल्कुल अच्छा न लगता। नई माँ मन ही मन उससे जलने लगीं थीं और चाहती थीं कि वह मर जाए तो उन्हें चैन मिले ज्यादातर अब तिलका सुन्दर को भूखा ही सोना पड़ता, सबके खा लेने के बाद जो बचा हुआ रहता वही उसके आगे रख दिया जाता। छोटे भाई व बहन भी उससे हर समय लड़ते रहते और अपनी माँ से उसकी झूठी शिकायतें करते रहते। तिलका सुन्दर का यह हाल उसके पिता से न देखा जाता, वो भी दुःखी रहने लगे। एक दिन उन्होंने मौका देखकर तिलका सुन्दर से कहा—"बेटी, तू भूखी सो जाती है, यह देखकर मुझे बहुत दुःख लगता है। तेरी माँ की पाली हुई गाय है, तू उसका दूध पी लिया कर, उससे तेरा पेट भर जाएगा।" तिलका सुन्दर ने कहा, "अच्छा पिता जी, अब मैं ऐसा ही करूँगी।"

अब रोज़ रात में सब के सो जाने के बाद तिलका सुन्दर चुप-चाप उठ कर माँ की गाय के पास जाती और बड़े प्यार से कहती—

"माँ की गाय भूख लगी।"

ऐसा कहते ही गाय दूध दे देती, जिसे पीकर तिलका सुन्दर का पेट भर जाता। दूध पीने से उसकी तन्दुरुस्ती भी ठीक होने लगी।

नई माँ को आजकल गाय का दूध कम मिलता। पहले तो उन्होंने ध्यान नहीं दिया मगर जब एक महीना बीत गया तब उन्हें कुछ शक हुआ। क्योंकि वो देख रही थीं कि तिलका सुन्दर अब फिर खुश और तन्दुरुस्त दिखाई दे रही है। उन्होंने चौंड़ भसक्को से कहा, "चौंड़ आजकल तिलका सुन्दर फिर तगड़ी हो रही है, कहीं यह रात में गाय का दूध तो नहीं पी लेती है, ज़रा आज रात जागकर इसका पता लगाना और मुझे बताना।"

चौंड़ भसक्को ने वैसा ही किया। उसने देखा कि रात में सबके सो जाने पर तिलका सुन्दर धीरे से गाय के पास गई और मज़े से दूध पीकर सो गई। सुबह होने पर उसने सबसे पहले रात वाली बात हो माँ को बताई। माँ को तो पहले ही शक हो गया था, चौंड़ की बात सुनकर उसे बहुत गुस्सा आया। उसने तय कर लिया कि वह गाय को निकाल कर ही चैन लेगी।

शाम को तिलका सुन्दर का पिता जब घर लौटा तो नई माँ ने रात का सब किस्सा बढ़ा-चढ़ा कर उसे सुनाया और साथ में यह भी कहा कि या तो वह घर में रहेगी या गाय। तिलका सुन्दर के पिता अपनी नई बीबी के ज़िद्दी स्वभाव को जानते थे, उन्हें लाचार होकर गाय को हटा देना पड़ा। तिलका सुन्दर बेचारी फिर पहले की तरह उदास और भूखी रहने लगी।

कुछ दिनों बाद फिर एक दिन तिलका सुन्दर के पिता ने कहा, "बेटी तेरी माँ के हाथ का लगाया बेरी का पेड़ है, तू बेर खाकर ही अपना पेट भर लिया कर ।" बेचारी ने सोचा कि चलो दूध न सही बेर खाकर ही कुछ पेट तो भरेगा । अगले दिन रात में सब के सो जाने के बाद वह धीरे से बेरी के पेड़ के नीचे गई और बोली—

"माँ की बेरी भूख लगी ।" इतना सुनते ही बेरी के पेड़ की डालियाँ नीचे झुक गईं और तिलका सुन्दर ने मज़े से मीठे-मीठे बेर खाकर अपना पेट भरा और सो गई ।

तिलका सुन्दर के कुछ महीने बेरी के सहारे ठीक से बीते, मगर इसकी भी ख़बर उसकी नई माँ को हो गई । नई माँ ने फिर पहले की तरह जिद्द करके बेरी का पेड़ भी कटवा दिया ।

तिलका सुन्दर का दुःख उसके पिता से देखा न जाता था । अब वो रोज़ की इस परेशानी से तंग आ गया था । वो चाहता था कि कोई अच्छा सा लड़का मिल जाए जिससे वो तिलका सुन्दर की शादी करके, उसे सुखी बना सके ।

एक दिन एक राजकुमार रास्ता भूलकर उसी गाँव में आ गया । राजकुमार ने तिलका सुन्दर को देखा तो देखता ही रह गया । गाँव वालों से राजकुमार ने तिलका सुन्दर के बारे में पता



"राजकुमार ने तिलका सुन्दर को देखा तो देखता ही रह गया।"

लगाया तो सभी ने उसकी बहुत बड़ाई की और साथ ही यह भी बताया कि उसकी सौतेली माँ उसे बहुत तकलीफ़ दे रही है ।

सारी बातें जानने के बाद राजकुमार ने तिलका सुन्दर से शादी करने का पक्का इरादा कर लिया । वह तिलका सुन्दर के पिता से मिला और जल्दी ही बारात लेकर आने के लिए कह गया ।

तिलका सुन्दर की खूब धूम-धाम से शादी हो गई । अब वो एक राजा की रानी थी और एक सुन्दर से महल में रहती थी । उसकी सेवा के लिए बहुत से नौकर-चाकर थे । हाथी, घोड़े और बहुत से जानवर पले थे । तिलका सुन्दर सभी के खाने-पीने का ध्यान रखती और इसके बारे में नौकरों से पूछती रहती । यहाँ भी तिलका सुन्दर अपनी सुन्दरता और अच्छे स्वभाव की वजह से बहुत जल्दी सबकी प्यारी बन गई । राजा तो उसे बहुत चाहता था, उसकी कोई बात नहीं टालता था ।

एक साल खूब सुख से बीत गया । अब तिलका सुन्दर को अपने पिता की याद सताने लगी, उसने सोचा एक बार घर चल कर पिता जी का हाल देखा जाए । उसने राजा से अपने मन की बात कही तो राजा ने इज़ाजत दे दी, साथ ही उसके जाने का भी सब इंतजाम करवा दिया । अपने छोटे भाई बहन के लिए कपड़े व ढेर सी मिठाई व फल लेकर, वह अपने पिता के घर के लिए चल दी ।

घर पहुँचने पर उसके पिता बहुत खुश हुए, नई माँ भी बड़े प्यार से मिलीं। चौंड़ भसक्को काफी बड़ी लगने लगी थी छोटा भाई भी खूब मज़ेदार बातें करता था। सभी तिलका सुन्दर के आने से बहुत खुश थे, एक महीना इसी तरह हँसी-खुशी में बीत गया। दिन भर सब लोग उससे राजा व राजमहल के बारे में पूछ-ताछ करते रहते।

एक दिन तिलका सुन्दर सर धोकर बाल सुखा रही थी तो उसकी नई माँ ने बड़े प्यार से कहा, "आओ मैं तुम्हारे सर में तेल लगा दूँ, महल में तो नौकरानी लगा देती होगी।"

तिलका सुन्दर ने मना नहीं किया और अपनी नई माँ के पास आकर बैठ गई। नई माँ के मन में तो कुछ और ही था, सर में तेल लगाने का तो बहाना था। तेल लगाते-लगाते उसने तिलका सुन्दर के सर में एक जादू की कील ठोंक दी, जिससे वो मैना चिड़िया बनकर आसमान में उड़ गई। तिलका सुन्दर के चले जाने के बाद उसने अपनी बेटी चौंड़ भसक्को को तिलका सुन्दर की जगह, राजा के पास भेजने की बात तय की।

हर समय वो चौंड़ से यही कहती, "तुम्हें तिलका सुन्दर बनकर उसके घर जाना है।" तिलका सुन्दर के कपड़े उसे पहनाती और तरह-तरह की बातें उसे समझाती।

इधर राजा ने तिलका सुन्दर को विदा कराने के लिए ख़त भेजा मगर उसके जवाब में नई माँ ने लिखवा भेजा कि तिलका सुन्दर को माता निकल आई हैं, इसलिए अभी दो महीने वो नहीं भेज सकेंगी।

मैना बनकर तिलका सुन्दर उड़ते-उड़ते अपने महल में पहुँची।

वहाँ वो नौकरों से पूछती, "घोड़ों को दाना दिया, हाथी ने खाना खाया।"

नौकर कहते—"हाँ मैना, खाया।"

दो महीने बाद राजा आकर चौंड़ भसक्को को विदा करा ले गया। वो कपड़े व जेवर सब तिलका सुन्दर के ही पहने थी, घूँघट काढ़े चुपचाप राजा के साथ चली गई। महल में पहुँच कर जब राजा ने घूँघट हटाया तो हैरान रह गया।

राजा ने पूछा—"सच-सच बताओ तुम कौन हो।"

चौंड़ भसक्को ने कहा—"मैं आपकी तिलका सुन्दर ही हूँ। मुझे माता निकल आई थीं, उसी से मेरा रंग भी काला पड़ गया और शक्ल भी पहले जैसी नहीं रही।" यह सब उसकी माँ ने पहले ही समझा दिया था। राजा ने सोचा शायद यही सच है।

महल के सभी नौकर चाकर हैरान और परेशान थे। क्योंकि यह रानी सभी पर रौब जमाती और कोई भी काम ठीक न होने पर डाँटती और राजा से भी शिकायत करती। किसी भी जानवर की तरफ इसका कोई ध्यान न रहता।

छः महीने बीत गए और मैना रोज़ ही ठीक समय पर आकर महल के चक्कर लगाती, थोड़ी देर बैठती, नौकरों से सब हाल पूछ कर उड़ जाती।

राजा भी बहुत उदास रहने लगा था। अब वो घर में कम और घर से बाहर ज्यादा रहता था। घंटों बाग़ में ही टहला करता था। उसका भी मिज़ाज बहुत चिड़चिड़ा हो गया था, इसलिए कोई भी नौकर चाकर उससे जल्दी बात करने की हिम्मत नहीं करते थे।

एक दिन बहुत हिम्मत करके राजा के ख़ास नौकर ने राजा से कहा, "सरकार करीब छः महीने से एक मैना रोज़ महल में आती है, नौकरों से सभी का हाल चाल पूछ कर, और थोड़ी देर महल पर बैठ कर चली जाती है।"

राजा ने कहा, "अच्छा ऐसी कोई मैना है जो बोलती भी हैं तो उसे पकड़ कर मेरे पास ले आओ।"

दूसरे दिन कुछ नौकरों ने उस मैना को पकड़ कर एक सोने के पिंजड़े में बन्द कर लिया और राजा के पास ले गए।

राजा ने उस पिंजड़े को अपने कमरे में ही रखा। मैना से बातें करके उन्हें अच्छा लगता। राजा अब जहाँ भी जाते मैना को अपने साथ ले जाते।

एक दिन बहुत ज़ोर की बारिश हुई। राजा की नींद खुली तो उन्होंने देखा कि मैना का पिंजड़ा गलती से बाहर ही रह गया है। राजा ने जल्दी से जाकर पिंजड़ा उठाया। मैना बेचारी बिल्कुल भीग गई थी। राजा ने बड़े प्यार से तौलिया निकाला और मैना को पोंछने लगा। पोंछते-पोंछते उसके हाथ में एक कील चुभी। राजा ने धीरे से उस कील को खींच लिया। कील का निकलना था कि मैना की जगह तिलका सुन्दरी खड़ी हो गई राजा तो यह सब देखकर हैरान हो गया।

तिलका सुन्दर ने सारी बात राजा को बताई। वह अपनी नई माँ की चालाकी समझ गई। चौंड़ को उसकी जगह रानी बना कर भेजा गया था, यह भी उसने समझ लिया। जब यह सारी बात राजा को मालूम हुई तो उसे बहुत गुस्सा आया। उसने बदला लेने की सोची।



"कोल का निकलना था कि मैना की जगह तिलका सुन्दर खड़ी हो गई ।"

एक दिन राजा ने अपने जल्लादों को बुलाकर हुक्म दिया— नई रानी (चौंड़ भसक्को) जब अपने महल में सो रहीं हों तो उनके टुकड़े-टुकड़े करके एक बोरे में बन्द करके लाए जाएँ।

राजा का हुक्म कैसे टलता। "नई रानी" को तलवार से टुकड़े-टुकड़े करके और एक बोरे में भरकर राजा के सामने लाया गया। राजा ने उस बोरे की पार्सल बनवा कर अपनी ससुराल भेज दिया।

जब यह पार्सल ससुराल पहुँचा तो भाई बहुत खुश हुआ और अपनी माँ से कहने लगा—"माँ देखो तिलका सुंदर वहाँ एक साल रही मगर कुछ नहीं भेजा और मेरी दीदी ने थोड़े ही दिनों में यह पार्सल भेज दिया।"

जब तक माँ काम से निबट कर पार्सल खोलती तब तक उसका भाई उसे छू-छूकर अंदाज़ लगाने लगा कि इसमें जरूर उसके लिए अच्छी-अच्छी चीजें आई हैं।

माँ ने जैसे ही बोरे की सिलाई खोलकर सामान बाहर निकाला, उसकी चीख़ निकल गई और वो बेहोश होकर गिर गई। उसकी प्यारी बेटी के कटे हुए हाथ पाँव उसके सामने पड़े थे। भाई भी, जो अब तक बहुत खुश हो रहा था, यह सब देख कर घबरा गया। अब क्या हो सकता था, सौतेली माँ को अपने किए का फल मिल चुका था।

तिलका सुन्दर फिर पहले ही की तरह राजमहल में राज करने लगी।

———